उर्वर तटीय मैदान और दक्षिणापथीय पठार

सिन्धु-गङ्गा मैदान भारतके भौगोलिक क्षेत्रके पाँचवें भाग और कृषियोग्य क्षेत्रके २/५वें भागपर फैला है। इसके अतिरिक्त भारतका प्रायद्वीपीय भाग पूर्वी और पश्चिमी तटीय मैदानोंसे घिरा हुआ है। ये मैदान भी नदियों की मिट्टीसे निर्मित हैं और अति उर्वर हैं।

पश्चिमी तटीय मैदान गुजरातके अपेक्षाकृत विस्तृत क्षेत्रसे आरम्भ होता है और दक्षिणकी ओर जाते हुए संकरा होता जाता है। गुजरातके दक्षिणमें यह मैदान कोंकणके नामसे जाना जाता है। और आगे दक्षिणमें इसे मलबार कहते हैं। कोंकण एवं मलबारके तटीय मैदानोंकी माध्य चौड़ाई ७० किलोमीटर है। ये दोनों मैदान अपनी विशिष्ट उर्वरताके लिये विख्यात हैं।

पूर्वी तटीय मैदान उत्तरमें गङ्गाके नदीमुखसे प्रारम्भ होकर दक्षिणमें कलिङ्ग, आन्ध्र और चोलमण्डल क्षेत्रोंमें फैला हुआ है। यह मैदान पश्चिमी तटीय मैदानकी अपेक्षा अधिक चौड़ा है। दक्षिणी पठारसे पूर्व की ओर बहनेवाली चार महान् नदियों, महानदी, गोदावरी, कृष्णा एवं कावेरीके अत्यन्त उर्वर एवं विस्तृत नदीमुख इस मैदानमें पड़ते हैं।

पूर्वी एवं पश्चिमी तटीय मैदान ४ करोड़ हेक्टेयर कृषियोग्य भूमिसे सम्पन्न हैं। सिन्धु-गङ्गा मैदान और इन दो तटीय मैदानोंके विस्तारमें भारतवर्षका एक-तिहाई भाग और भारतके कृषिक्षेत्रका दो-तिहाई भाग आ जाता है। जीवनदायिनी नदियों द्वारा लायी गयी मृदासे निर्मित यह सम्पूर्ण क्षेत्र अत्यन्त उपजाऊ है।

भारतकी शेष प्रायः समस्त कृषियोग्य भूमि दक्षिणी पठारमें पड़ती है। यह प्रायद्वीपीय पठार १,००० से २,००० फुट ऊँचा है और अनेक नदीघाटियों एवं पहाड़ियोंमें विभाजित है। पश्चिमको बहनेवाली नर्मदा और तपती एवं पूर्वको बहनेवाली महानदी, गोदावरी, कृष्णा एवं कावेरी नदियाँ इस पठारका सिञ्चन करती हैं। पठारके उत्तर-पश्चिमी भागकी काली मिट्टी अत्यन्त उपजाऊ है। यह मिट्टी कपास उगानेके लिये विशेष उपयुक्त मानी जाती है। नदीघाटियोंकी मिट्टी तो उर्वर है ही।

भारतभूमि जैसे किसी विस्तृत भूखण्डमें ऐसी अखण्डित एवं विपुल उर्वरताकी विश्वमें कहीं अन्यत्र कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसीलिये भारतवर्ष विश्वभर का भरण करने में सक्षम है।

पुण्यसलिला गङ्गा

सिन्धु, गङ्गा एवं ब्रह्मपुत्रकी गणना विश्वकी महानतम नदियोंमें होती है। इनमें गङ्गाका अपना विशिष्ट स्थान है। पुण्यसलिला गङ्गा भारतकी भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवनशक्तिका स्रोत है।

गङ्गोत्रीसे गङ्गासागरतक गङ्गाके प्रवाहका विस्तार २,५२५ किलोमीटर है। गङ्गानदीमें प्रति सेकेंड ३८,००० घनमीटर जल प्रवाहित होता है। प्रवाहकी मात्राके मापदण्डपर गङ्गा विश्वकी तीसरी सबसे बड़ी नदी है। केवल दक्षिण अमरीकाकी अमेज़न (१००,००० घनमीटर प्रतिसेकेंड) और अफ्रीकाकी कोंगो नदी (४३,००० घनमीटर प्रतिसेकेंड) का प्रवाह गङ्गासे अधिक है। गङ्गा प्रतिवर्ष ३६ करोड़ टन मृदा हिमालयसे लाकर भारतभूमिको उर्वर करती है। मृदाकी मात्राके मापदण्डपर केवल चीनकी हुआंगहे एवं चांगजिआंग नदियाँ और अमरीकाकी मिस्सीसिप्पी नदी गङ्गासे आगे हैं। हुआंगहे तो कीचड़की ही नदी है, इसीलिये इसे पीली नदी भी कहा जाता है।

गङ्गा मात्र आँकड़ोंके कारण महान् नहीं है। गङ्गानदी अत्यन्त मन्थर गतिसे भारत के मर्मप्रदेशसे प्रवाहित होती हुई यहाँकी भूमिको भलीभाँति और अत्यन्त गहराईतक जल एवं मृदासे समृद्ध करती चली जाती है। गङ्गाके इस मन्थर जीवनदायी प्रवाहमें ही भारतभूमिकी विपुल उर्वरताका रहस्य निहित है। भारतभूमिका मर्मप्रदेश वस्तुतः गङ्गासे ही जन्मा है और अनादिकालसे गङ्गा इसका पोषण करती चली आ रही है।

पण्डित जवाहरलाल नेहरूकी गणना भारतके विशिष्ट भूगोलकी पावनताके प्रति विशेष संवेदनशील व्यक्तियोंमें नहीं होती। परन्तु गङ्गाकी महानतासे वे भी विचलित हुए थे। गङ्गाके विषय में वे लिखते हैं कि—

“गङ्गा वस्तुतः ‘भारतकी नदी’ है। इतिहासके उषा-कालसे गङ्गा भारतके हृदयको छूती रही है। अगणित कोटि लोग इसके तटोंकी ओर आकृष्ट होते रहे हैं। अपने उद्गमस्थलसे सागरतक गङ्गाकी गाथा... भारतीय सभ्यता एवं संस्कृतिकी गाथा ही है।”

अन्य देश अपनी महान् नदियोंको गङ्गाकी संज्ञा देते हैं। श्रीलंकाके लोग अपनी महानतम नदीको ‘महावेली गङ्गा’ कहते हैं। हिन्दचीनकी मेकांग नदीका नाम ‘महागङ्गा’ का ही अंग्रेज़ीकृत रूप है।

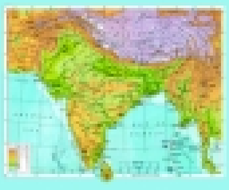

भारतकी अन्य महान् नदियाँ

महान् नदियाँ महान् सभ्यताओंको जन्म देती हैं। विश्वकी अधिकतर प्रमुख सभ्यताओंका उदय किसी एक महान् नदी अथवा किसी नदीद्वयपर ही हुआ है। मिस्रकी सभ्यताका उद्भव नील नदीके तटपर हुआ। मेसोपोटेमिया युफरेट्स एवं टिग्रिस नदियोंपर पनपी। यूरोपीय सभ्यता दान्यूब नदीसे उत्पन्न एवं पोषित हुई।

भारत विश्वका कदाचित् एकमात्र ऐसा भूखण्ड है जिसपर एक-दो नहीं अपितु अनेक महान् सभ्यताकारिणी नदियाँ प्रवाहित हो रही हैं। इन नदियोंमें से प्रत्येक विश्वकी किसी महान् सभ्यताको जन्म देने एवं पोषित करनेमें समर्थ है।

भारतभूमिपर उत्तरसे दक्षिणकी ओर चलना प्रारम्भ करें तो पहले सिन्धु नदी और उसकी सहायक पंजाबकी पाँच नदियोंके दर्शन होते हैं। आगे, भारतके मध्यमें, यमुना, सरयू, गण्डक, कोसी और इन सबको अपनेमें समाहित करती हुई गङ्गानदी प्रवाहित हो रही है। और आगे पूर्वमें ब्रह्मपुत्र आसाम एवं बांग्लादेशके मैदानोंसे बहती हुई गङ्गामें आ मिलती है। नर्मदा और तपती पूर्वसे पश्चिमकी ओर बहती हुई दक्षिणापथीय पठारके उत्तरी भाग और मध्यप्रदेश, गुजरात एवं महाराष्ट्रके अनेक भागोंका सिञ्चन करती हैं। पश्चिमसे पूर्वकी ओर बहती हुई गोदावरी महाराष्ट्र और आन्ध्रप्रदेशको उर्वर बनाती है। महानदी मध्यप्रदेश एवं उत्तरी ओडिसासे प्रवाहित होती है। कृष्णा और कावेरी आन्ध्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडुको समृद्धि प्रदान करती हैं।

जिन नदियोंका यहाँ नाम लिया गया है वे भारतकी सर्वोत्कृष्ट नदियाँ हैं, इनमें से प्रत्येककी गिनती विश्वकी महान् नदियोंमें होती है। इनके अतिरिक्त किञ्चित् लघु विस्तारवाली अनेक नदियाँ हैं जिनसे भारतके प्रायः समस्त भागोंका सिञ्चन होता है। विश्वमें इतने बड़े विस्तारका कदाचित् ही अन्य कोई ऐसा भूखण्ड हो जहाँ नदियोंका ऐसा बाहुल्य है।

भारतके लोग नदियोंके रूपमें प्राप्त प्रकृतिकी इस विलक्षण सम्पदाके लिये सदैव कृतज्ञ रहे हैं। वे प्रातःस्नानके समय नित्य इन नदियोंका नामस्मरण करते हैं और उनके प्रति श्रद्धानत होते हैं।

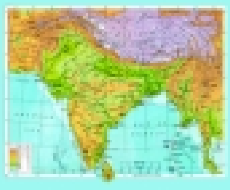

विपुल वृष्टिका देश

भारतमें वर्षाका परिमाण एवं यहाँकी उर्वरा भूमिकी पर्याप्त शस्य उत्पन्न करनेकी क्षमता मानसूनपर निर्भर हैं। 'मानसून' अरबी शब्द 'मौसम' का अंग्रेज़ीकृत रूप है। भारतमें इसे वर्षाऋतु कहा गया है। भारतमें होनेवाली कुल वृष्टिका ९० प्रतिशत वर्षाऋतुके आसपासके तीन महीनोंमें बरसता है। इस सघन वृष्टिसे देशके प्रायः समस्त भाग आप्लावित हो जाते हैं। वर्षाके इस प्राचुर्यसे वञ्चित रहनेवाले दो ही क्षेत्र हैं। पहला, सिन्धुका मैदान, जिसमें सिन्धप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, उत्तरपश्चिमी-सीमाप्रदेश और बलूचिस्तानके कुछ भाग सम्मिलित हैं। और दूसरा, पूर्वी तटपर स्थित रामनाथपुरम् और शिवगङ्गाके आसपासके सुदूर दक्षिणी भाग।

जलगर्भित पवनोंको लाने और उनकी समस्त जलराशि भारतभूमि पर ही निःशेष करवा देनेमें हिमालय-पर्वतकी विशेष भूमिका है। हिमालयके उत्तरमें स्थित तिब्बतको तो इस विपुल जल-राशिका किञ्चित् भाग भी प्राप्त नहीं हो पाता।

भारतीय भूखण्डमें वार्षिक वृष्टिकी माध्य मात्रा १०५ सेंटीमीटर है। यह मात्रा पर्याप्त बड़े आकारके विश्वके किसी भी भूखण्डकी अपेक्षा अधिक बैठती है। वर्षासे भारतभूमिपर प्रतिवर्ष ४५ खरब घनमीटर जल प्राप्त होता है। अमरीकी संयुक्तराज्यका क्षेत्रफल भारतसे ढाई गुणा है, परन्तु वहाँ पड़नेवाले जलकी कुल मात्रा भारतके प्रायः समान ही है। और प्राकृतिक सम्पदाकी दृष्टिसे संयुक्तराज्य अमरीकाको विश्वके समृद्धतम क्षेत्रोंमें से एक माना जाता है। चीनका क्षेत्रफल अमरीकासे भी कुछ अधिक है, वहाँ प्रायः ६० खरब घनमीटर जल बरसता है। इस प्रकार वहाँ वार्षिक वृष्टिकी माध्य मात्रा केवल ६३ सेंटीमीटर बैठती है, जो भारतकी माध्य वार्षिक वृष्टिका दो-तिहाई मात्र है।

भारतमें वर्षभरमें प्राप्त होनेवाले जलमें से प्रायः साढ़े चार खरब घनमीटर जल भूमिगत भण्डारोंका पुनर्भरण करता है। भारतकी नदियोंमें प्रतिवर्ष २० खरब घनमीटर जल प्रवाहित होता है। चीनकी नदियोंका कुल वार्षिक प्रवाह २६ खरब घनमीटर है और अमरीकाकी नदियोंका १५ खरब घनमीटर।

इस प्रकार वर्षाके रूपमें भारतको प्राप्त होनेवाले और भारतकी नदियोंमें प्रवाहित होनेवाले जलकी मात्रा विश्वके सर्वाधिक सम्पन्न और भारतसे कहीं अधिक विशाल क्षेत्रोंके समतुल्य है।

धूप और ऊष्माका देश

हिमालय उर्वरा मृदा और जीवनदायी जलसे भारत-भूमिका पोषण तो करते ही हैं साथ ही प्रचुर शस्यके उत्पादनके लिये अनिवार्य ताप एवं ऊष्माका संरक्षण भी करते हैं।

भारतीय भूखण्ड पृथिवीके उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रमें नहीं आता। समस्त भारतभूमि भूमध्यरेखाके उत्तरमें स्थित है और इसका ६० प्रतिशत भाग कर्करेखाके ऊपर है। इस भौगोलिक स्थितिके अनुरूप भारत-भूमिके अधिकतर भागको शीतोष्ण प्रदेशके अन्य देशोंकी भाँति अत्यन्त ठण्डा होना चाहिये। परन्तु उत्तरमें खड़ी हिमालयकी अत्युच्च प्राचीर उत्तरसे आनेवाली हिमानी पवनोंको भारतके बाहर रोक देती है और उष्णकटिबन्धीय समुद्रोंसे उठनेवाली तप्त एवं सिक्त पवनोंको भारतभूमिसे बाहर नहीं जाने देती। यह विशिष्ट भौगोलिक संरचना भारतभूमि के जल-वायुको उष्ण एवं आर्द्र बनाये रखती है। इस प्रकार भारतवर्ष सघन शस्योंके उत्पादन एवं विविध रूपोंमें जीवनके प्रफुल्लित होनेके लिये पृथिवीपर आदर्श स्थान-सा बन गया है।

सूर्य-भगवान्‌की भारतभूमिपर विशेष कृपा है। इस विस्तृत भूखण्डके प्रायः प्रत्येक भागपर वर्षमें प्रतिदिन धूप चमकती है। अतः सब स्थानोंपर सब ऋतुओंमें शस्यकी वृद्धि होती रहती है। भारतके सब भागोंमें और विशेषतः नदियोंकी मृदासे सम्पन्न विस्तीर्ण मैदानोंमें वर्षमें दो शस्य उगाना सम्भव है, प्रयासपूर्वक वर्षमें तीन शस्य भी लिये जा सकते हैं।

विश्वमें इतने बड़े विस्तारका ऐसा कोई अन्य भूखण्ड नहीं है जहाँ वर्षमें एकसे अधिक शस्य उगाना सम्भव होता हो। चीनके उर्वर पूर्वतटीय मैदानोंके अधिकतर भागमें वर्षमें एक ही शस्यका उत्पादन हो पाता है, इन मैदानोंके उष्णकटिबन्धमें पड़नेवाले कतिपय दक्षिणी भागोंपर ही दो वर्षोंमें पाँच शस्य लेपाना सम्भव होता है। भारतमें तो प्रायः समस्त स्थानोंपर ऐसा करना सम्भव है।

भारतवर्षमें भूमि, हिमालय, वर्षा एवं सूर्यकी उच्च सम्पदाओंका कुछ ऐसा अनुपम सुयोग बना है कि इस भूमिने विश्वके सर्वाधिक समृद्ध कृषिक्षेत्रका रूप ले लिया है। इसीलिये इस भूमिको शस्यश्यामलाका विशेषण प्राप्त है। अपनी इस सहज सम्पदाके बलपर यह भूमि सम्पूर्ण विश्वका भरण करनेमें सक्षम है। इसीलिये इसे *भारत* कहा जाता है।

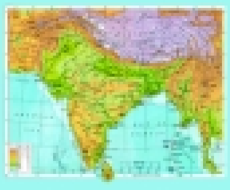

भारतकी वनस्पति एवं पशु सम्पदा

भारतभूमि उर्वरा मृदा, प्रचुर जल एवं उष्ण-सिक्त जलवायुसे सम्पन्न है। अतः यहाँ वनस्पतियों, पशु-पक्षियों एवं जीव-जन्तुओंकी अनन्त जातियाँ सहज सम्भव हैं। भारतमें वनस्पतियोंकी ४५ सहस्र जातियाँ पायी जाती हैं। इनमें से ३५ प्रतिशत भारतीय क्षेत्रकी विशिष्ट जातियाँ हैं, ये विश्वमें कहीं अन्यत्र प्राकृतिक रूपमें नहीं मिलती। विश्वके वानस्पतिक वैविध्यसे सर्वाधिक सम्पन्न क्षेत्रोंमें भारतकी गणना होती है।

भारतमें पशु-पक्षियों एवं जीव-जन्तुओंकी ७५ सहस्र जातियाँ मिलती हैं। यह इस धरापर उपलब्ध प्राणिजगत्की समस्त जातियोंका बारहवाँ भाग है। भारतभूमिका भौगोलिक विस्तार पृथिवीका मात्र चालीसवाँ भाग है। भारत अपने यहाँ पाये जानेवाले सूक्ष्मजीवियोंके वैविध्यके लिये भी विख्यात है।

भारतवासी प्राचीनकालसे अपने वनस्पति एवं प्राणि-जगत्का गहनतासे अध्ययन करते रहे हैं। चरकसंहिता एवं सुश्रुतसंहिता जैसे आयुर्वेदके स्रोतग्रन्थोंमें वर्णित वनस्पतियों, पशु-पक्षियों एवं जीव-जन्तुओंकी संख्या असाधारण है। वनस्पति एवं प्राणिजगत्के ज्ञानकी व्यापकता एवं गहनतामें केवल चीनी सभ्यताके चिकित्सा-सम्बन्धी स्रोतग्रन्थ आयुर्वेदके किञ्चित् समकक्ष कहे जा सकते हैं।

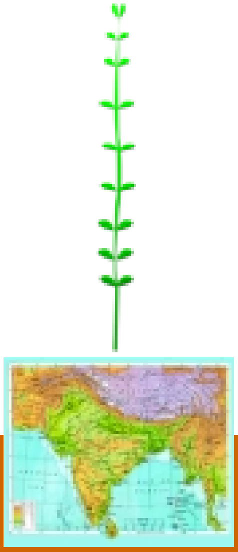

भारतकी खनिज सम्पदा

भारतभूमिपर अपार खनिज सम्पदा उपलब्ध है। इस सम्पदाके आधारपर भारतकी औद्योगिक विकासकी सम्भावनाएँ विश्वमें तीसरे स्थानपर आँकी जाती हैं। भारतमें लौह-अयस्कके प्रचुर, व्यापक एवं उत्कृष्ट भण्डार हैं। लौह-अयस्कके प्रमाणित भण्डारोंकी मात्रा १२ अरब टन है। हमारे आजके उत्पादन एवं उपयोगके स्तरपर ये भण्डार ३०० वर्षोंके लिये पर्याप्त हैं। भारतमें २ खरब २० अरब टन कोयले एवं भूरे कोयलेके भण्डार हैं। भारतीय कोयलेमें राखका अंश किञ्चित् अधिक होता है, परन्तु उत्खनन और उपयोगके वर्तमान स्तरपर ये भण्डार ७५० वर्षोंतक पर्याप्त हैं।

अपेक्षाकृत नवीन धातुओंके अयस्कोंके विषयमें भारत और भी समृद्ध है। एल्यूमिनियम-अयस्क बॉक्साइटके भारतीय भण्डार विश्वके सबसे बड़े भण्डारोंमें गिने जाते हैं। टाइटेनियम-अयस्क इल्मेनाइटके प्रमाणित भारतीय भण्डार विश्वमें सर्वाधिक हैं। 'विरल-मृदा' नामक विशिष्ट खनिजोंके भारतीय भण्डार केवल चीनसे न्यून पड़ते हैं। विरल-मृदाओंमें से एक थोरियमके भारतमें ३ लाख ६० सहस्र टनके भण्डार हैं। ये भण्डार १० लाख मेगावाटकी नाभिकीय ऊर्जाकी क्षमता स्थापित करने और उसे २४० वर्षोंतक चलाते रहनेमें सक्षम हैं।

महत्त्वपूर्ण धात्विक एवं अधात्विक खनिजोंके भारतीय भण्डार अधिकतर प्रचुरसे मध्यमकी श्रेणीमें आते हैं। न्यूनता केवल कच्चे तेलकी है। कच्चे तेलके भण्डारोंका समुचित पर्यवेक्षण अभी नहीं हुआ है। परन्तु इस न्यूनताकी पूर्ति सौर ऊर्जा, कोयले एवं नाभिकीय ऊर्जाके लिये आवश्यक खनिजोंके प्रचुर भण्डारोंके सम्यक् उपयोगसे सर्वदा सम्भव है।

विश्वका सर्वाधिक जनाकीर्ण देश

भारतभूमि असाधारण प्राकृतिक सम्पदासे अभिमण्डित है। अतः स्वाभाविक ही है कि इस भूमिपर व्यापक जनसमाजका भरण-पोषण होता रहा है। प्रायः आधुनिककालतक भारतीय सभ्यता विश्वकी अन्य सब बड़ी सभ्यताओंकी तुलनामें अधिक जनसंकुल रही है। जनसांख्यिकी विज्ञानके आधुनिक विद्वानोंके अनुमानानुसार सोलहवीं ईसवी शताब्दीके अन्ततक भारतकी जनसंख्या विश्वमें सर्वाधिक थी। चीन भारतके तुरन्त पीछे दूसरे स्थानपर हुआ करता था।

फ़रिश्ताका १६०० ईसवीका अनुमान है कि ११०० ईसवीमें भारतकी जनसंख्या ६० करोड़ थी। पश्चिमी विद्वानोंके अनुसार उस समय सम्पूर्ण यूरोपीय क्षेत्रकी जनसंख्या मात्र दस करोड़ थी। भारतीय सभ्यताके अनेक स्रोतग्रन्थ एकमत हैं कि भारतभूमिपर पाँच लाख ग्रामोंका वास है। कौटिल्यके अर्थशास्त्रमें कहा गया है कि एक ग्राममें एकसे पाँच सौतक कुटुम्ब होते हैं। इसका तात्पर्य है कि भारतीय सभ्यताके उत्कृष्ट कालोंमें भारतमें पाँचसे पच्चीस करोड़तक कुटुम्ब हुआ करते थे।

आज भारतीय विश्वके बड़े समुदायोंमें चौथे स्थान पर आते हैं। यूरोपीय, चीनी और मुसलमान क्रमशः पहले, दूसरे एवं तीसरे स्थानपर हैं। मानवताके प्रायः सम्पूर्ण इतिहासमें भारतीय मानवसमुदायका अधिकांश रहे हैं। आज हम विश्वकी जनसंख्या का मात्र छठा भाग हैं।